पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com
पवन प्रवाह

लखनऊ व प्रदेश में शीतलहर से ठण्ड व धुंध से हवा में जानलेवा कणों की मात्रा में बढ़ोत्तरी

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

विगत 25-26 नवम्बर 2016 से हिमांचल के नजदीक दिल्ली व हिमालय से सटे उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में शीतलहर व कोहरे के साथ साथ हवा में जहरीले कणों का धुन्ध छाया हुआ है । इससे सांस लेना मुश्किल हो रहा है। मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान भी उनके विश्लेषणों पर खरा नहीं उतर पा रहा है। लगभग 10 दिनों से कोहरा छटने का नाम नहीं ले रहा है। जनमानस में अभी इसका कारण केवल ठण्ड का मौसम प्रारम्भ होने व कोहरा पिछले सालों की तरह ही आने का अन्देशा माना जा रहा है। शायद यह जानकारी नहीं है कि इस समय सांस लेने में दिक्कत क्यों हो रही है? डॉ. भरत राज सिंह, वरिष्ठ पर्यावरणविद व महानिदेशक-तकनीकी, स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ से पवन प्रवाह के संवाददाता ने इस विषय पर चर्चा की। प्रस्तुत हैं उसके प्रमुख अंशः-

पत्रकारः लोगों का मनाना है कि इस बार ठण्ड कम पड़ेगी। भारतीय मापविद्या संस्थान, पूना के वैज्ञानिकों ने विगत सप्ताह अपनी एक रिपोर्ट में अंकित किया है तथा 24 नवम्बर को समाचार पत्रों के माध्यम से प्रकाशित भी हुआ है- इसमे आपका क्या विचार/सुझाव है?

डॉ. सिंहः उक्त से मैं सहमत नहीं हूं। यद्यपि मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि 2015 की शीतकालीन समय गरम गुजरी थी और अभी इस वर्ष ठंडक पड़ना शुरू हो गयी है। उनके अनुसार यह नीनो के कमजोर रहने के कारण ही हो रहा है। तथा यह भी उनका अनुमान है कि यदि ठण्ड का मौसम थोड़ा गरम रहता तो कोहरे में कमी आ जाती। परन्तु जिस तरीके से ठण्ड ने अपनी दस्तक दी है, इस वर्ष शीतकाल में 4-6 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान और नीचे जाने की सम्भावना- महाराष्ट्र व तेलंगाना जनपद के अधिक स्थानों पर बढ़ी रहेगी। इस समय मेढक में 10 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आ चुका है और अभी वर्तमान में पूना में सबसे कम तापमान 9.9 डिग्री सेंटीग्रेड रिकॉर्ड किया गया है। ओडिशा के फुलवानी में 7.6 डिग्री सेंटीग्रेड तथा भवानीपटना व कालाहांडी में 8.7 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आ चुका है। इसके विपरीत हिमांचल प्रदेश के पहाड़ी इलाकों, जैसेः शिमला, धर्मशाला व नहान में सामान्य से 3 .5 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक 11.8 से 12.8 डिग्री सेंटीग्रेड महसूस किया जा रहा है। इस पर आई. आई. टी. मैट्रोलोजी, पूना द्वारा शोध किया जा रहा है कि आगे की क्या स्तिथि होगी?

पत्रकारः इस वर्ष शीतलहर अभी 8-10 दिनों से महसूस हो रही है जब कि ठण्ड का मौसम अभी शुरू हुआ है, क्या ठण्ड का मौसम पहले खिसक आया है?

डॉ. सिंहः मेरे विचार से, पहाड़ी इलाकों में ग्लोबल वार्मिंग के पिछले प्रभावों से ग्लेशियर की चट्टानें बहुत अधिक पिघल चुकी हैं तथा शीतकालीन मौसम में इनमे अधिक जमाव की संभावना अधिक नहीं है जो भी बर्फबारी होगी भी वह ग्लेशियर के तापमान के समतुल्य कम अर्थात नीचे होने से बर्फ उस पर जमेगी नहीं, बल्कि इनका पलायन मैदानी इलाकों में हवा के रुख के अनुसार-दिल्ली, उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश होगा और उनका बहुत सा हिस्सा ठण्ड से अधिक प्रभावी होगी और वंहा पर ठण्ड के मौसम-मार्च/अप्रैल 2017 तक बढ़ने की पूर्ण सम्भावना है।

पत्रकारः लखनऊ शहर में शीतलहर के कोहरे के साथ साथ हवा में धुन्ध छाया हुआ है, उसमें सांस लेना मुस्किल हो रहा है। इसका क्या कारण है तथा इससे क्या नुकसान होगा- कुछ प्रकाश डाले?

डॉ. सिंहः कोहरे कारण हवा में प्रदूषण के कण नीचे आ जाते है और इस समय पीएम-2.5 349 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर से 493 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर लखनऊ के कुछ क्षेत्रों में पहुंच चुकी है जो स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। यद्यपि हवा के प्रदूषण को रोकने व क्वालिटी बढ़ाने हेतु 'जलवायु संरक्षण नीति' लागू की गयी है। जिसमें वाहनों व औद्योगिकीकरण से निकलने वाले धुएं से उत्पन्न पार्टिकुलेट मैटर (PM) को अ). पीएम-2.5 60 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर तथा ब). पीएम-10-100 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर तक सीमित रखना तय किया गया है। आज हवा में प्रदूषण के कण 8-9 गुणा सीमा से अधिक बढ़ चुका है, जो जान-लेवा साबित होगा। लखनऊ व दिल्ली देश ही नहीं वरन पूरे विश्व में सबसे अधिक प्रदूषित शहर की श्रेणी में आ चुका है। आज जो भी सुबह-शाम घरों से बाहर निकलते हैं, तो उन सभी को सांस लेने में कठिनाई महसूस होती है। इसका मुख्य कारण-जो ग्रीन हाउस गैसो के प्रदूषित कण वायु मंडल में विद्यमान आसमान में 15 से 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर बादल के रूप में मौजूद हैं वह इस शीतलहर में ओश की बूंदों के दबाव में जमीन के शतह के पास आ गए हैं। इससे हवा की क्वालिटी बहुत गिर गयी है और सांस लेते संमय यह कण जो नैनो आकार व माप में हैं, सांस नाली के द्वारा जनमानस व जीव-जन्तुओ में फेफड़ों, ह्दय की धमनियों व आंतों में चिपक जाते हैं जो भविष्य में कभी भी निकल नहीं पाएंगे। इससे उनकी दीवालों के रास्ते को भी सकरा कर देंगे, जिससे तरह-तरह के रोगों के उत्पन्न होने का खतरा बढ़ता जा रहा है। सभी लोगों को विशेषकर बच्चों व वुजुर्गों को, इस मौसम में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। जब वह घर से बाहर निकलें तो नाक पर मास्क अवश्य लगा ले। अब मैं सामाज के सभी लोगों से अपेक्षा करता हूं कि वह अपने व पड़ोस के घरवालों के सदस्यों को सतर्क करे कि ऊपर बताये हुए निर्देशों का पालन करें तथा अपने घर के आसपास, उपरी छत से जमीनी तल तक पानी का छिड़काव प्रत्येक दिन अवश्य करें, जिसके हवा में मौजूद यह जहरीले कण जमीन पर पंहुच जाएं और आप के परिवार को नुकसान ना पहुंचा सके।